विमानवाहक के रुप में आईएनएस विक्रांत का नया संस्करण

12 जुलाई को कोच्चि में भारतीय नेवी के पुराने फ्लैगशिप, आईएनएस विक्रांत के नए संस्करण के रूप में एक बड़ी उपलब्धि हासिल की गई।

4 मार्च, 1961 को भारतीय उच्चायुक्त विजयलक्ष्मी पंडित की उपस्थिति में बेलफास्ट, उत्तरी आयरलैंड में भीषण सर्दी की एक तूफानी सुबह भारतीय नौसेना के प्रथम विमानवाहक के रूप में आईएनएस विक्रांत का जलावतरण किया गया था। 1971 के युद्ध के दौरान विक्रांत ने बांग्लादेश की नाकेबंदी की थी और इसके समुद्री लड़ाकू विमानों ने चटगांव और कॉक्स बाजार में पाकिस्तानी सेनाओं और वाहनों पर जबरदस्त गोलाबारी की थी। 31 जनवरी, 1997 को विक्रांत समुद्र से बाहर निकाल लिया गया था, जो अब मुम्बई के दलदली इलाके में एक तैरते हुए समुद्री संग्रहालय के रूप में काम कर रहा है।

किंतु, महान नौसेनाएं अपने लड़ाकू जहाजों को हमेशा जिंदा रखती हैं; और भारत के प्रथम विमानवाहक बेड़े का पुनर्जन्म देश में बने प्रथम विमानवाहक के रूप में होगा। 12 जुलाई को कोच्चि शिपयार्ड लिमिटेड (सीएसएल) में विक्रांत के नए संस्करण का शुभारंभ हुआ। यह इसके बुनियादी ढांचे के पूरा होने और उसकी ''आउट फिटिंग'' के अगले चरण की शुरुआत का संकेत था, जिसमें आंतरिक मशीनरी, वायरिंग, पाइपिंग, हथियार और सेंसर्स फिट किए जाएंगे। इससे जहाज के वर्तमान 18,500 टन के भार में और बढ़ोतरी होगी और यह भारी मूल विक्रांत के 40,000 टन के बराबर हो जाएगा। नौसेना के डिजाइनरों के अनुसार कई प्रणालियों का भार बढ़ने के कारण योजनाबद्ध 37,500 टन भार में और इजाफा होने की संभावना है। उनके अनुसार भार बढ़ने से जहाज के कार्य निष्पादन पर असर नहीं पड़ेगा।

इसके भार में 4,500 टन इंजन ईंधन, 1500 टन विमान ईंधन, 1000 टन ताजा जल और 500–1000 टन गोला बारूद शामिल होगा। 1500–1600 सदस्यों का चालक दल जहाज को प्रचालित करेगा और कार्रवाई के लिए आवश्यक होने पर यह जहाज अनेक सैनिकों (या नौसैनिकों) को ले जा सकेगा।

जहाज पर मिग–29 के और तेजस लाइट कम्बैट एयरक्राफ्ट के दो स्क्वाड्रन (प्रत्येक में 12 लड़ाकू जहाज) भी होंगे। इसके अतिरिक्त उसमें करीब 10 हेलिकॉप्टर होंगे जो मुख्य रूप से पनडुब्बी–प्रतिरोधी खोज करेंगे और हवाई कमान प्रणालियों के रूप में काम करेंगे।

समुद्री परंपरा के अनुसार, विक्रांत का शुभारंभ एक महिला, एलिजाबेथ एंटनी, रक्षामंत्री ए के एंटनी की पत्नी, द्वारा किया गया। ईश वंदना के रूप में मंत्रोच्चारण के बाद उन्होंने जहाज के अग्रभाग में एक नारियल फोड़ा, जो देश में बने इस्पात जहाज के लिए प्रथम परीक्षण था। विक्रांत का निर्माण स्टील अर्थारिटी ऑफ इंडिया द्वारा आपूर्ति किए गए इस्पात से किया गया है। यह परीक्षण सफल रहा।

इसका जलावतरण छोटे लड़ाकू जहाजों को पानी में उतारने के भव्य प्रवेश की तरह नहीं था जिन्हें रोलरों पर नाटकीय ढंग से भूमि से पानी में उतारा जाता है, जिससे भारी कीचड़ और कचरा उत्सर्जित होता है। 260 मीटर लंबे विक्रांत को इस प्रक्रिया के जरिए जल में उतारना संभव नहीं था। इसकी बजाय इसे सूखी गोदी से संयत ढंग से खींच कर वेनबांडू चैनल के निकट पानी में उतारा गया।

अगले एक–डेढ़ साल में इसे आउटफिट किया जाएगा और इसके सुपर स्ट्रक्चर का निर्माण किया जाएगा। डेक पर पांच मंजिला सुपर स्ट्रक्चर के अंतर्गत पुल, रडार और रूस द्वारा निर्मित एविएशन कॉम्प्लैक्स होगा, जो उड़ान प्रचालनों को नियंत्रित करेगा। हथियार और सेंसर्स लगने के बाद 2015 में विक्रांत पर समुद्री परीक्षणों और विमानन परीक्षण की एक व्यापक प्रक्रिया शुरू होगी। इसके बाद इसे नौसेना के बेड़े में शामिल किया जाएगा।

नौसेना के लिए, जिसने 1961 में अपने पहले लड़ाकू जहाज आईएनएस अजय का निर्माण किया था, विक्रांत आत्मनिर्भरता की यात्रा में अद्यतन मील का पत्थर है। भारत मझगांव गोदी, मुम्बई में कोलकाता–क्लास डेस्ट्रायर्स जैसे अत्याधुनिक लड़ाकू जहाज बनाता है, लेकिन यह 7,000 टन से नीचे रहे हैं। विक्रांत का आकार बहुत बड़ा है जो इसके निर्माण को क्षमता की दृष्टि से बड़ी उपलब्धि बनाता है।

नौसेना अध्यक्ष एडमिरल डी के जोशी ने इस अवसर पर कहा, ''नौसेना हमेशा इस बात के प्रति सजग रही है कि जहाजों की डिजाइनिंग और निर्माण किसी भी राष्ट्र के लिए बुनियादी रणनीतिक क्षमता होता है।''

2018 में नौसेना में शामिल होने के बाद विक्रांत नौसेना का तीसरा विमानवाहक पोत होगा। रक्षा मंत्री ने कहा कि आईएनएस विक्रमादित्य, जो पहले एडमिरल गोर्शखोव के रूप में जाना जाता था, इस वर्ष बाद में पहुंचेगा। कारवाड़ के नए नौसैनिक ठिकाने से प्रचालित विक्रमादित्य पश्चिमी बेड़े का फ्लैगशिप होगा। उससे कहीं अधिक पुराना आईएनएस विक्रांत पूर्वी बेड़े का नेतृत्व करेगा, जिसे विशाखापट्टनम से संचालित किया जाता है। नौसेना के लड़ाकू जहाज अधिग्रहण और उत्पादन विभाग के महानिदेशक वाइस एडमिरल के आर नायर ने बताया कि विक्रांत की अद्यतन लाइफ–साइकिल–एक्सटेंशन रीफिट को देखते हुए यह निकट भविष्य में दीर्घावधि तक सेवाएं प्रदान करेगा।

विक्रांत के जलावतरण से नौसेना की दीर्घावधि की वह अभिलाषा पूरी होगी जिसके अनुसार तीन विमान वाहक एक साथ सेवाएं प्रदान करें ताकि किसी एक विमानवाहक के मरम्मत अथवा लाइफ–साइकिल–एक्सटेंशन (जीवन चक्र विस्तार)के लिए जाने की स्थिति में, कम से कम एक–एक जहाज पश्चिमी और पूर्वी सी–बोर्ड्स के लिए हमेशा उपलब्ध रहे।

श्री एंटनी ने कहा कि ''देश में निर्मित विमान वाहक का जलावतरण लंबी यात्रा में पहला कदम है, लेकिन यह महत्वपूर्ण है।''

अगले जहाज, तथाकथित इंडिजिनॅस एयरक्राफ्ट कैरियर–2 (आईएसी–2) के आकार और क्षमताओं के बारे में अटकलें लगाई जा रही हैं। विश्लेषकों का अनुमान है कि यह 65,000 टन श्रेणी का होगा, जो अधिक क्षमता का होगा और अनेक विमानों को ले जा सकेगा।

किंतु, वाइस एडमिरल नायर, जो नौसेना के प्रमुख लड़ाकू जहाज योजनाकार हैं, ने बताया कि नौसेना अभी किसी निष्कर्ष पर नहीं पहुंची है। उन्होंने बताया कि यह निर्णय किया जाना है कि आईएसी–2 कितने विमानों को ले जाएगा और उसी के अनुसार उसका भार और आकार तय होगा। विक्रांत की क्षमता 34 विमानों को ले जाने की है। नौसेना यह चाहेगी कि अगला पोत 45–50 विमानों को ले जाने की क्षमता रखता हो। आकार प्रोपल्शन सिस्टम तय करेगा; गैस टरबाइन कम जटिल होती है, लेकिन वे पांच से दस हजार टन ईंधन का वजन बढ़ाती हैं। किंतु, परमाणु रिएक्टर की अपनी जटिलताएं हैं। उनकी री–फ्यूलिंग अवधि बहुत लंबी होती है जिसमें जहाज की कार्यावधि समाप्त हो चुकी होती है।

आईएसी–2 के बारे में एक महत्वपूर्ण निर्णय प्रक्षेपण प्रणाली से भी संबंधित है। अमरीकी कंपनी, जनरल अटोमिक्स ने नौसेना को नई पीढ़ी ''इलेक्ट्रो मैग्नेटिक एयरक्राफ्ट प्रक्षेपण प्रणाली'' (ईएमएएलएस) की जानकारी दी है, जो अमरीकी नौसेनिक विमान वाहकों की अगली पीढ़ी को सुसज्जित करेगी। नौसेना को यह चिंता है कि ईएमएएलएस अपेक्षाकृत गैर–परीक्षित होगी, और वह इसकी वर्तमान ''शॉर्ट टेक–ऑफ बट अरेस्टिड लैंडिंग'' (एसटीओबीएआर) विन्यास के साथ काम कर पाएगी। योजनाकार सुपरिक्षित प्रणाली ''कैटापुल्ट असिस्टिड टेकऑफ बट अरेस्टिड लैंडिंग'' (सीएटीओवीएआर) का भी मूल्यांकन कर रहे हैं जिसका इस्तेमाल अमरीकी नौसेना द्वारा दशकों से किया जारहा है।

(बिजनेस स्टेंडर्ड में प्रकाशित अजय शुक्ला के आलेख का संपादित संस्करण)